देह अभिमान है बड़ा विषैला पांच फनों का नाग
मूर्छित कर देगा ये तुझको इसके चंगुल से भाग
याद की यात्रा कहलाता है सांप सीढ़ी का खेल
देह अभिभान के कारण होता है विकारों से मेल
जो होता है सम्पूर्णता मंजिल के बिलकुल पास
माया उसको हराने की कोशिश करती है ख़ास
देह अभिमान की ठोकर से मन हो जाता उदास
विकारों में घिरने से होता सर्व शक्तियों का नाश
देह अभिमान मिटाना है तो भर ले याद का बल
श्रीमत को अपनाकर जीवन का पूरा ढंग बदल
मन की सूखी धरती को ज्ञानामृत पिलाता चल
दिव्य गुणों के पौधे अपने मन में तूं लगाता चल

एकांत में बैठकर स्वचिंतन का हल चलाता चल
अवगुण रूपी काँटे योगाग्नि से पिघलाता चल
जोड़ सारे रिश्ते बाबा से योगाग्नि जलाता चल
बाप समान होकर सबको ज्ञानामृत पिलाता चल
ॐ शांति